International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2017; 2(1): 39-41
© 2017 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 24-11-2016
Accepted: 25-12-2016

वागीश मिश्र
शोध छात्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
वागीश मिश्र
शोध छात्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

वैदिक वाङ्मय में रूद्रः एक परिचय

वागीश मिश्र

प्रस्तावना

पौराणिक काल में तथा वर्तमान में रूद्र को जितना महत्व व प्राधान्य प्राप्त है उतना वैदिक काल में न था। वर्तमान में शिव का जो स्वरूप प्राप्त है वह शताब्दियों के क्रमिक विकास का फल है। प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में रूद्र से सम्बद्ध मात्र तीन ही सूक्त प्राप्त होते हैं।[1] इनके अतिरिक्त अन्य देवताओं के साथ इनका नाम लगभग पचास (50) बार आता है। ऋग्वेद में रूद्र का स्थान अग्नि, वरूण, इन्द्र आदि देवताओं की अपेक्षा बहुत ही कम महत्व का है, परन्तु यजुर्वेद व अथर्ववेद में रूद्र का प्रभाव बढ़ा है। यजुर्वेद का एक पूरा अध्याय ही इनकी स्तुति में प्रयुक्त है। तैत्तिरीय संहिता का सोलहवां (16) अध्याय 'रूद्राध्याय' के नाम से विख्यात है।

ऋग्वेद में रूद्र को गौरवपूर्ण के तेजस्वी युवक के रूप में चिन्हित किया गया है, जो अपने धनुष व बाणों को लेकर इतस्ततः विचरण करते हैं व क्रुद्ध होने पर मनुष्यों तथा पशुओं का विनाश कर डालते हैं। इनका रूप अत्यंत तेज युक्त है[2] और उसी प्रकार चमकता है जैसे आभावान सूर्य या स्वर्ण।[3]

स्वर्ण से इनका विशेष सम्बन्ध है। सोने के चमकीले आभूषणों के पहनने के कारण इनका शरीर दीप्तिमान् दिखाई पड़ता है।[4] आभूषणों में सोने का बहुरंगी हार इन्हें विशेष प्रिय है।[5] इनके शरीर का वर्ण बभ्रु या भूरा माना गया है।[6] इनको युवक कहा गया है।[7] इनके अंग स्थिर या दृढ़ हैं। शारीरिक अंगों में इनके हाथ तथा बाहु का विशेष उल्लेख किया गया है। इनका हाथ मंगलमय तथा शीतलता पहुँचाने वाला है।[8] शारीरिक बल में रूद्र को बलवानों से बलवान कहा गया है।[9] इनका उदर कोमल व हनु सुन्दर है।[10]

रूद्र का वाहन है रथ, और शस्त्र धनुष तथा बाण।[11] वाजसनेयी संहिता में रूद्र के धनुष का नाम पिनाक बताया गया है।[12] उनके अन्य आयुध भी तीक्ष्ण हैं। रूद्र का धनुष स्थिर व बाण तीव्र गति वाले हैं। एक स्थान पर इनको हाथ में वज्र धारण किये हुए बताया गया है।[13] तडित या विद्युत को उनका विशेष अस्त्र बताया गया है, जो रूद्र के द्वारा आकाश से फेंका जा कर पृथिवी पर आता है। कवि इस विद्युत् से अपने और पुत्रादिकों को बचाने की रूद्र से प्रार्थना करता है।[14]

ऋग्वेद में अन्य देवों की तुलना में रूद्र के स्वरूप की जो विशेषता उन्हें इतर देवों से पृथक् करती है, वह है, उनका, उग्र, तथा मनुष्यों व पशुओं को नष्ट करने वाला भीषण रूप। उनके लिये भीम (भयानक), उग्र व उपहत्नु (घातक) विशेषण प्रयुक्त हुए हैं।[15] अथर्ववेद में उनकी अर्धक–घाती कहा गया है।[16] ऋग्वेद में रूद्र के प्रति कहे गये मन्त्रों में स्तुतिकर्ता का भय स्पष्ट झलकता है। एक स्थल पर कवि रूद्र से अपने बच्चों, माता–पिता तथा अश्व, वृषभ आदि पशुओं को नष्ट न करने की प्रार्थना करता है।[17] ऋग्वेद द्वितीय मण्डल में भी स्तोता प्रार्थना करता है कि रूद्र की शक्ति हम लोगों को छोड़ दे व उनकी विनाश करने वाली दुर्बुद्धि हमारे विषय में उत्पन्न न हो।[18] स्तोता रूद्र से प्रार्थना करता है कि वे उस पर क्रुद्ध न हों।[19]

परवर्ती साहित्य में भी रूद्र का भयंकर स्वरूप प्राप्त होता है। वाजसनेयी संहिता में ऋषि रूद्र को उनका भाग देने के उपरान्त, उनसे बिना किसी की हिंसा किए मूजवान् पर्वत के पार जाने की प्रार्थना करता है।[20]

रूद्र के इस भयंकर स्वरूप से इतर उनका दूसरा पक्ष भी है। जिसमें उनहें अत्यन्त कृपालु, कल्याणमय, तथा श्रेष्ठ वैद्य कहा गया है। जो अपनी विविध प्रकार की औषधियों के द्वारा मनुष्यों के सब रोगों को दूर करते हैं।[21] रूद्र देवों के क्रोध व उनसे होने वाले संकटों को भी दूर करते हैं।[22] रूद्र शम् (कल्याण) तथा मयसू (सुख) के वे कर्ता हैं। इसीलिये उनको वाजसनेयी संहिता में शंकर व मयस्कर कहा गया है।[23] संसार की सभी ओषधियों पर उनका अधिकार है।[24] उनके पास सहस्रों ओषधियाँ है।[25] इन ओषधियों का प्रयोग करके मनुष्य सौ वर्षों तक जी सकता है।[26] यही कारण है कि रूद्र को 'सभी वैद्यों में श्रेष्ठ' की उपाधि दी गई है।[27]

रूद्र का शरीर नितान्त बलशाली है। ऋग्वेद में वे क्रूर बताये गये हैं। वे सबसे श्रेष्ठ वृषभ हैं। वे तरूण हैं उनका तारूण्य सदा टिकने वाला है, वे शूरों के अधिपति हैं व अपने सामर्थ्य से वे पर्वतों में टिकी हुई नदियों में बल का प्रवाह उत्पन्न कर देते हैं। उन्हें न मानने वाले मनुष्यों को वे अवश्य अपने बाणों से छिन्न–भिन्न कर देते हैं, परन्तु अपने उपासक मनुष्यों के लिये वे अत्यन्त उपकारी हैं। इसीलिये वे शिवनाम से भी पुकारे जाते हैं। उनके सम्बन्धियों का परिचय मन्त्रों के अध्ययन से होता है। 'मरूत्पिता' रूद्र की महत्वपूर्ण उपाधि है। उनको स्थान–स्थान पर मरुतों का पिता कहा गया है।[28] रूद्र ने उन्हें पृश्नि के गर्भ से उत्पन्न किया। रूद्र के पुत्र होने के कारण मरुतों को प्रायः रूद्राः अथवा रूद्रियाः कहा गया है।[29]

'त्रयम्बक' विशेषण ऋग्वेद के मात्र एक ही मन्त्र से प्राप्त होता है।[30] परन्तु परवर्ती साहित्य में यह विशेषण 'रूद्र' के लिये बहुधा प्रयुक्त है। ऋग्वेद में प्राप्त होने वाला य मन्त्र वाजसनेयी संहिता में भी प्राप्त होता है।[30] इसे ही आगे चलकर महामृत्युञ्जय मन्त्र की संज्ञा मिली।

त्र्यम्बक शब्द का अर्थ प्रायः भाष्यकारों ने 'तीन नेत्रों वाला' किया है, परन्तु पाश्चात्य विद्वानों को इस अर्थ में आस्था नहीं है। वे यहाँ 'त्र्यम्बक' शब्द को जननी वाचक मानकर रूद्र को तीन मातावाला बतलाते हैं, परन्तु यह स्पष्टतः प्रतीत होता है कि ये तीन माताएं कौन थीं। शतपथ ब्राह्मण इस विषय में कहता है कि रूद्र की अमिबका नामक एक ब्रह्म है। उस स्त्री–अम्बिका से सम्बन्धित होने के कारण रूद्र को स्त्र्यम्बक या त्र्यम्बक कहते हैं।[31]

इस विषय पर एक अन्य तथ्य के आलोक में भी विचार किया जा सकता है। वह है रूद्र का अग्नि के सम्बन्धों के आधार पर शतपथ ब्राह्मण विभिन्न प्रसंगों में रूद्र व अग्नि को एक ही बताता है।[32] तैत्तिरीय संहिता में भी इस मत की पुष्टि एक कथा के माध्यम से होती है।[33]

इसके अनुसार एक बार जब देवों का असुरों से युद्ध हुआ तब देवों ने अपने धन अग्नि के पास रख दिया। अग्नि उस धन के प्रति लोभाग्रस्त हो गये। संग्राम के पश्चात् देवों ने बलात् अपना धल लेना चाहा, जिससे वह रो पड़े। इसी रो पड़ने से ही उन्हें रूद्र कहा गया।

सः अरोदीत् यदरोदीत् तद्रुद्रस्य रूद्रत्वम्।[33]

अग्नि को रूद्र मानने की धारणा ब्राह्मण ग्रन्थों में स्वतन्त्र रूप से उद्भूत नहीं हुई। इसके बीज प्राचीनतर वैदिक संहिताओं में ही प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद में ऐसे मन्त्र हैं, जिनमें अग्नि व रूद्र का तादात्म्य किया गया है अथवा जिनमें रूद्र शब्द अग्नि के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है।[34]

इन सन्दर्भों से रूद्र व अग्नि की समीपता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। मूल प्रसंग पर आने पर 'त्रयम्बक' शब्द जो कि रूद्र का विशेषण है, 'तीन माताओं वाला' यह अर्थ प्रकाशित करता हुआ प्रतीत होता है। ऋग्वेद में अग्नि को पृथ्वी अन्तरिक्ष, आकाश में जन्म लेने वाला बताया गया है। इन तीन स्थानों से उत्पन्न होने के कारण बहुत संभव है कि यह विशेषण मूलतः अग्नि के लिये प्रयुक्त रहा हो बाद में अग्नि व रूद्र की समानता के कारण रूद्र से सम्बन्धित हो गया हो।

यजुर्वेद के शतरूद्रिय सूक्त में हमें रूद्र के तत्कालीन व्यक्तित्व की सम्पूर्ण रूप रेखा प्राप्त होती है। यहाँ रूद्र को सैकड़ों विशेषणों तथा उपाधियों से विभूषित किया गया है। स्थूल अथवा सूक्ष्म, भौतिक अथवा आध्यात्मिक कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जो रूद्र से सम्बन्धित न हो व जिस पर रूद्र का आधिपत्य न हो। रूद्यपि यहाँ रूद्र के लिये शिव, मयोमु शंकर, मीदुष्टम विशेषण प्रयुक्त हैं फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि स्तोता रूद्र के कोप व भयानक रूप से भयभीत होकर ही उनकी इस प्रकार स्तुति कर रहा है व इसलिये बार–बार उनसे अपने कल्याणमय रूप को दिखाने की ही प्रार्थना करता है।[35]

रूद्र की सभी विशेषताओं व कार्यों का अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि रूद्र में अमंगल या हानि पहुँचाने वाले जो तत्व होते हें वह अन्य किसी देवताओं में दिखाई नहीं पड़ते। शेष सभी देवतागण प्रायः उदार व दयालु हैं। वैदिक ऋषि विविध प्रकार की स्तुतियों से उन्हें प्रसन्न करके अपना कार्य सिद्ध करना चाहते हैं। किन्तु अपनी स्तुति न करने वाले के प्रति न तो वे अप्रसन्न होते हैं न ही उन्हें किसी प्रकार की हानि पहुँचाते हैं। इसके विपरीत 'रूद्र' में मंगल व अमंगल दोनों तत्वों का समावेश है। लोक विश्वास की धार्मिक प्रवृत्ति आज भी ऋद्धा की अपेक्षा भय से अधिक प्रेरित होती है। यही कारण है आज भी ग्राम्यवासी विष्णु, शिव की अपेक्षा प्रायः स्थानीय देवी–देवताओं में अधिक विश्वास रखते हैं। इस स्तर पर देवी–देवताओं में कल्याणकारी व अमंगलकारी दोनों स्वरूप विद्यमान होते हैं व यह दोनों विपरीत तत्व सहज स्वीकार भी किये जाते रहे हैं।

उपसंहार

इसी प्रकार की विशेषता प्रायः रूद्र में भी दिखाई पड़ती है। स्तुतिकर्ता का कल्याण रूद्र करते हैं परन्तु क्रोधित होने पर वह अमंगल भी करते हैं। अपने इसी स्वरूप के कारण वैदिक देवमण्डल में रूद्र अन्य देवों से भिन्न एक विशेष व्यक्तित्व रखते हैं। उनका यही व्यक्तित्व उन्हें लोकविश्वास के देवताओं के समीप स्थापित करता है। अतः धीरे–धीरे कर्मकाण्ड के क्षेत्र से हटकर सामान्य निम्नवर्गीय लौकिक क्षेत्र में उनकी लोकप्रियता बढ़ने लगी। इसका एक कारण वैदिक कर्मकाण्डों में रूद्र को अधिक महत्व न दिया जाना भी था। परिणामस्वरूप रूद्र लौकिक देवताओं के साथ सम्मिश्रित होकर परिवर्तित व परिवर्द्धित होता रहा व लोक विश्वास धरातल पर मजबूत जड़ों के साथ स्थिर हो गया। यही कारण है कि परवर्ती वैदिक युग में कर्मकाण्ड के महत्व क्षीण होने पर जहाँ इन्द्र, वरूण, आदि महान् दैवी शक्तियाँ भी तिरस्कृत होकर अपना महत्व खो बैठीं वही रूद्र का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही रहा व महाकाव्यों तथा पुराणों के काल तक आते–आते वे जगत् की सर्वोच्च शक्ति की अभिव्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हो गये।

एको हि रूद्रो न द्वितीयाय तस्युः .....।[36]

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची

1. ऋग्वेद, 1/114
   2/33
   7/46
2. त्वेषं रूपं तपसा निहवामहे। ऋग्वेद–10/114/5
3. यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते। ऋग्वेद–1/43/5
4. शुक्रेभिः पिपिशे हिरण्यैः। ऋग्वेद–2/33/9
5. अर्हन् निष्कं यजतं विश्वरूपं.....विभर्षि। ऋग्वेद–2/33/10
6. ऋदूदरः सुहवो मा नो अस्यैः ब्रभुः, ऋग्वेद–2/33/5
7. स्तुति श्रुतं गर्तसदं युवानं। ऋग्वेद–2/33/11
8. क्वस्य ते रूद्रः मृऽयाकुर्हस्तो। ऋग्वेद–2/33/7
9. तवस्तमस्तवसां ब्रज्रवाहो। ऋग्वेद–2/33/3
10. ऋदूदरः सुहवो मा नो अस्यै बभ्रूः सुशिप्रो रीरधन्मनायै। ऋ0–2/33/5
11. तमु ष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वाः– ऋग्वेद–5/4/11
    अहं रूद्राय धनुरातनोभि– ऋग्वेद–5/4/11
12. अवततधन्वा पिनाकावसः–वा0स0 3/61
13. ऋग्वेद–2/33/3
14. या ते दिद्युदवसृष्टा दिवस्परि क्ष्मया चरति परि सा वृणक्तुः नः। ऋग्वेद–7/46/3
15. स्तुहि श्रुतं गर्तसमद युवानं मृगं न मीममुपहत्नुमुग्रम्। ऋग्वेद–2/33/11

16. रूद्रेणार्धकधातिना तेन मा समरामहि। अथर्ववेद–11/2/7
17. मा नो वधीः पितरं मोत मातरं। मा नः प्रियास्तन्वो रूद्र रीरिषः। ऋग्वेद–1/114/7
मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। ऋग्वेद–1/114/8
18. परिणो हेती रूद्रस्य वृज्याः परि त्वेषस्य दुर्मतिः मही गात। ऋग्वेद–2/33/14
19. मा त्वा रूद्र चुक्रधाम। ऋग्वेद–2/33/4
20. अहिंसन् नः शिवः परो मूजवतः अतीहि। वा0सं0–3/61
21. .....हस्तो यो अस्ति भेषजो जताषः। ऋग्वेद–2/33/7
22. आरे अस्मद् दैव्यं हेलो अस्यतु। ऋग्वेद–1/114/4
23. नमः शंभवाय च मयोभयाय च, नमः शंकराय च मयस्कराय च, नमः शिवाय च शिवतराय च। वाजसनेयी संहिता–16/41, रूद्री–5/41
24. यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य। ऋग्वेद–5/42/11
25. सहस्रं ते स्वपिवात भेषजा। ऋग्वेद–7/46/1
26. त्वा दत्तेमी रूद्र शंतमेभिः शतं हिया अशीषभेषजेभिः। ऋग्वेद–2/33/2
27. भिषक्तं त्वां भिषजां शृणोमि। ऋग्वेद–2/33/4
28. इदं पित्रे मरुतामुच्यते वचः। ऋग्वेद–1/114/6
आ ते पितर्मरुतां सुमन्मेत। ऋग्वेद–2/33/1
29. युवानो रूद्रा अजरा अमोग्घनो। ऋग्वेद–64/3
दिवि रूद्रासो अधि चक्रिरे सदः। ऋग्वेद–1/85/2
30. त्र्यम्बकं यजामते सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।
ऋग्वेद–7/5/14
वा0सं0–3/60
31. अम्बिका है वै नाम अस्य स्वसा तया अस्यैष सह भागः
तद् यदस्यैष स्त्रिया सह भागः तस्मात् स्त्र्यम्बको नाम।
शतपथ ब्राह्मण–2/6/2/9
32. यो वै रूद्रः सो अग्निः। शतपथ ब्राह्मण–5/2/4/13
अग्निर्वै रूद्रः। शतपथ ब्राह्मण–5/3/1/10
33. तैत्तिरीय संहिता– 1/5/1
34. त्वमग्ने रूद्रो असुरो महो दिवस्त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। ऋग्वेद–2/1/6
35. या ते रूद्र शिवा तनूः अघोरा पापकाशिनी
तया नस्तन्वा शन्नमया गिरिशन्ताभिचाकशीह।
वाजसनेयी संहिता–16/2
36. श्वेताश्वतरोपनिषद्–3/2